B. A. II Year (Sem-IV)

प्रश्न- जयशंकर प्रसाद जी की काव्यगत विशेषताएं।

उत्तर- प्रसाद जी की काव्य कृतियों के आधार पर हम उनकी प्रमुख काव्यगत विशेषताओं का निर्धारण सरलतापूर्वक कर सकते हैं, जो निम्नलिखित हैं :-

(1) **श्रृंगारिकता :-** प्रसाद जी मूलतः प्रेम और यौवन के कवि हैं। उनके काव्य में रागात्मकता की प्रधानता है। प्रसाद जी की भावव्यंजना पर विचार करते समय हम देखते हैं कि उनकी काव्य कृतियों में न्यूनाधिक मात्रा में प्रायः सभी रसों का सफल समावेश मिलता है, पर श्रृंगार रस प्रधानता के साथ प्रयुक्त हुआ है। श्रृंगार में दोनों पक्षों संयोग और वियोग में, संयोग की अपेक्षा वियोग श्रृंगार की अधिक प्रधानता है। संयोग के भी अनेक आकर्षक और भावग्राही चित्र प्रसाद जी की कृतियों में दीख पड़ते हैं। 'आँसू' का यह अंश दर्शनीय है —

हिलते द्रुमदल किसलय देती गलबाहीं डाली
फूलों का चुम्बन छिड़ती मधुपों की तान निराली।
मुरली मुखरित होती थी मुकुलों के अधर विहँसते,
मकरन्द भार से दबकर श्रवणों में स्वर जा बजते।

संयोग के समय की परिस्थितियों का चित्रण करते समय सुन्दर भावानुभावों की योजना करने में भी प्रसाद जी यथेष्ठ सफल रहे हैं। इसका सुन्दर उदाहरण 'कामायनी' में श्रद्धा एवं मनु के मिलन का प्रसंग है —

'मधु क्रीड़ा मिश्र चिन्ता! साथ ले उल्लास,
हृदय का आनन्द कूजन करने लगा रास।
गिर रही पलकें झुकी थीं नासिका की नोक,
भ्रूलता थी कान तक चढ़ती रही बेरोक।

प्रसाद जी के काव्य में वियोग श्रृंगार की अभिव्यक्ति अधिक परिमाण में हुई है और विरह-श्रृंगार करुणा सिंचन से निखर-सा गया है तथा लोक-कल्याण की शान्त कल्पना से पुनीत भी हो उठा है।

सब का निचोड़ लेकर तुम, सुख से सूखे जीवन में।
बरसो प्रभात हिमकन - सा आँसू इस विश्वसदन में।

(2) **प्रेम भावना** – 'चित्राधार' के बाद की काव्य - कृतियों में प्रसाद जी की प्रेम - भावना अधिक मुखर हुई है। 'प्रेम पथिक' में कवि की अनुभूति और विचारण के अद्भुत मिश्रण के दर्शन होते हैं। प्रेम की भावना अपने आप में अनन्त है। प्रेम की महत्ता स्पष्ट करते हुए प्रसाद जी लिखते हैं –

इस पथ का उद्देश्य नहीं श्रान्त भवन में टिक रहना।
किन्तु पहुँचना उस सीमा तक जिसके आगे राह नहीं।

निम्नलिखित पंक्तियों में प्रेम का लालसा भरा चित्र प्रस्तुत किया गया है –

मधु पीकर पागल हुआ करता प्रेम प्रलाप,
शिथिल हुआ जाता हृदय अपने आप।
लाज के बन्धन खोल रहा।

(3) **सौन्दर्य भावना और रूप चित्रण** – प्रसाद जी मूलतः प्रेम और सौन्दर्य के ही कलाकार माने जाते हैं। आधुनिक हिन्दी कवियों में कोई भी उन तक नहीं पहुँच सका है। रूप की भिन्न - भिन्न कलाओं और अवस्थाओं के ऐसे मार्मिक और सजीव चित्र उनके काव्य में मिलते हैं कि पाठक का हृदय आनन्द से भर जाता है। प्रसाद जी ने रूप वर्णन में एक ओर तो मानसिक वृत्तियों के प्रकाशन की ओर ध्यान दिया है और दूसरी ओर वे सूक्ष्म कल्पनाओं की योजना भी करते हैं। एक उदाहरण –

दूरागत वंशी रव
गूँजता था धीवरों की छोटी - छोटी नावों से।
भर उस यौवन के मालती मुकुल में

प्रसाद जी का मन नारी और पुरुष के सौन्दर्य चित्रण में अधिक रमा है। उन्होंने नारी सौन्दर्य के बेजोड़ चित्र प्रस्तुत किए हैं किन्तु इन चित्रों की विशेषता यह है कि इनमें रीतिकालीन कवियों की भाँति सस्ती वासना एवं मांसलता की गंध लेशमात्र भी नहीं। प्रसाद जी ने आँसू में नायिका के नख-शिख वर्णन की परम्परा को अपनाया है, किन्तु उसमें नवीनता के साथ-साथ सर्वथा नवीन उपमानों का प्रयोग किया गया है। एक उदाहरण —

बाँधा था विधु को किसने इन काली जंजीरों से।
मणि वाले फणियों का मुख क्यों भरा हुआ हीरों से ॥

(5) <u>प्रकृति प्रेम</u> — छायावाद युग में ही हिन्दी कविता में प्रकृति चित्रण को व्यापकता प्राप्त हुई और प्रकृति के सुन्दर मनामुग्धकारी चित्र भी अंकित किए गए। आरम्भ में प्रेम और यौवन के गायक कवि प्रसाद जी भी प्रकृति की ओर आकृष्ट हुए। उन्होंने सर्वप्रथम जीवन की भौतिकता पर असंतोष प्रकट करते हुए मानव हृदय को प्रकृति के अतुल ऐश्वर्य को आकर्षित किया है —

नील नभ में शोभित विस्तार,
प्रकृति है सुन्दर परम उदार।
नर हृदय परिमित पूरित स्वार्थ,
बात जँचती नहीं कुछ यथार्थ।

उन्होंने प्रकृति का मानवीकरण किया है। एक उदाहरण —

बीती विभावरी जाग री,
अम्बर पनघट में डुबो रही,
तारा घट उषा नागरी।

प्रसाद जी के काव्य में जहाँ प्रकृति के सुन्दर और प्रेरक चित्र हैं वहाँ उनके विनाशकारी और भयंकर रूप भी देखने को मिलते हैं। 'कामायनी' के प्रलय वर्णन का चित्र देखिए —

लहरें व्योम चूमने उठतीं, चपलाएँ असंख्य नचतीं।
गरल जलद की खड़ी झड़ी में, बूँदे निज संसृति रचतीं।
चपलाएँ उस जलधि विश्व में, स्वयं चमत्कृत होती थीं।
ज्यों विराट वाड़व ज्वालाएँ खण्ड-खण्ड हो रोती थीं॥

(5) रहस्योन्मुखता — हिन्दी साहित्य में रहस्यवाद के मुख्यतः दो रूप हैं — (1) साधनात्मक एवं (2) भावात्मक। रहस्यवाद की पहली शर्त यही है कि कवि के मन में इस अपरिचित संसृति का नियन्त्रण करने वाली विराट सत्ता के प्रति जिज्ञासा वृत्ति हो। प्रसाद जी भी उस अनन्त सत्ता के दर्शन के लिए लालायित दिखते हैं।

हे अनन्त रमणीय कौन तुम? यह मैं कैसे कह सकता।
कैसे हो? क्या हो? इसका तो भार-विचार न सह सकता।

(6) मानवीय भावनाएँ — प्रसाद जी मानवीय भावनाओं के कवि हैं। कामायनी में मानवीय प्रकृति के मूल मनोभावों का सूक्ष्म रूप में चित्रण किया है। 'कामायनी' में श्रद्धा का तकली गीत इसका उदाहरण है। यहां वे गांधीवाद से प्रभावित दिखते हैं —

जीवन का कोमल तन्तु बढ़े तेरी ही मानवता समान,
चिर लग्न प्राण उनमें लिपटे सुन्दरता का कुछ बढ़े मान।

'कामायनी' में ही कवि ने भारत की चिर उपेक्षित नारी को आदर सत्कार प्रदान किया है। —

नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नग पग तल में।
पीयूष स्रोत सी बहा करो,
जीवन के सुन्दर समतल में।

(7) कला पक्ष और भाषा शैली — प्रसाद जी ने हिन्दी साहित्य में छायावाद का द्वार खोला

और उन्हीं के हाथों इसकी सभी प्रमुख प्रवृत्तियों का सुंदरतम निदर्शन भी हो गया। अतः प्रसाद जी की काव्य-कृतियों में छायावादी कविता के कला पक्ष का प्रौढ़ एवं परिष्कृत रूप ही दृष्टिगोचर होता है।

कामायनी की प्रथम दो पंक्तियाँ यहां उदाहरणस्वरूप प्रस्तुत हैं—

हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर
बैठ शिला की शीतल छांह।

इन पंक्तियों में पांच शब्द तत्सम हैं किन्तु उसका गुम्फन जिस रूप में कवि ने किया है वह हिन्दी भाषा की प्रकृति के सर्वथा अनुकूल है।

प्रतीक और लक्षणा शब्द शक्ति के लिए हम उनके 'आँसू' का प्रथम पद प्रस्तुत कर सकते हैं—

इस करुणा कलित हृदय में
क्यों विकल रागिनी बजती।

प्रसाद जी की कला अलंकारों की अतुल सम्पत्ति की धारिणी भी है। उसका हर रंग रूपकों के रूप सौन्दर्य से रंजित है। एक उदाहरण—

सिंधु सेज पर धरा वधू अब तनिक संकुचित बैठी सी।
प्रलय निशा की हलचल स्मृति में मान किए सी ऐंठी सी।

प्रसाद जी ने कितने ही प्रकार के छन्द रचे हैं। तुकान्त, अतुकान्त, गीत, सानेट, आदि के सफल प्रयोग, तथा अनेक नवीन छन्दों के निर्माण से उन्होंने अपने काव्य को सजाया है।

कहना न होगा कि प्रसाद जी ने अमर काव्य की सृष्टि की है।